सिक्किम में हिंदी शिक्षण

छुकी लेप्चा

भारत का बाईसवाँ राज्य सिक्किम अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। न केवल प्राकृतिक सुन्दरता अपितु यहाँ के विविध सांस्कृतिक एवं धार्मिक पक्ष भी लोगों को आकर्षित करते हैं। कंचनजंघा की गोद में बसा ये राज्य शांतिप्रिय और पयर्टकों का पसंदीदा स्थान भी है।

राज्य की तीन प्रमुख जातियाँ लेप्चा, भूटिया, नेपाली है जो कई सदियों से एक साथ आपसी सद्भावना लेकर जीवन यापन करती हैं। इनकी अपनी-अपनी लिपियाँ है। लेप्चा की लिपि-मेन सोलोग है, भूटिया की धूमिसामबोटा है, लिम्बू की याकथुङ/श्रीजंगा है। इन तीनों भाषाओं को राजकीय भाषा की मान्यता प्राप्त है। प्रचलित भाषा के रूप में नेपाली भाषा का प्रचलन सबसे ज्यादा है। यहाँ के विद्यालयों में त्रि-फार्मूला का नियम है। विद्यालयों में प्रथम भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा पढ़ाई जाती है जो कि अनिवार्य भाषा है। दूसरी भाषा के रूप में स्थानीय भाषाएँ (वर्नाकुलर) के रूप में नेपाली, लेप्चा, लिम्बू, भूटिया, शेरपा, गुरुंग, मंगर, तामाङ, मुखिया, सुनुवार इत्यादि पढ़ाई जाती है। सभी उपजातियों की अपनी- अपनी लिपि है जैसे गुरुंग खेमा, तामाङ तामिक, मुखिया कोइंचब्रेसे, नेवार रंजना, शेरपा सामबोटा, मंगर- अंखारिका, राई बांतवा इत्यादि।

हिंदी शिक्षण की दृष्टिकोण से देखें तो जनजाति बाहुल्य राज्य में इसका शिक्षण करवाना बहुत कठिन कार्य है। सबकी अपनी मातृभाषाएँ है। हिंदी में रुचि रखने वाले विद्यार्थी ही हिंदी सीखने के इच्छुक हैं। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली समान्तर की भाषा नेपाली है। यहाँ हर जगह नेपाली भाषा का प्रयोग होता है, इस कारण नेपाली भाषा विषय लेकर पढ़ने वालों की संख्या सबसे अधिक है। हिंदी और नेपाली में तत्सम शब्द जो संस्कृत से आए हैं, वे लगभग एक ही हैं किंतु नेपाली में हर वाक्य में विभक्ति जुड़ती है, हिंदी में अलग- अलग लिखा जाता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

नेपाली में-

1. आमाले मलाई खाना दिनुभयो।

2. मेरो किताब भाईलाई दिएँ

3. जनता राजमा जनतै राजा।

4. विचारकों धनी हुनुपर्छ।

हिंदी में-

1. माँ ने मुझे खाना दिया।

2. मेरी किताब भाई को दिया।

3. जनता के राज्य में जनता ही राजा।

4. विचार का धनी होना चाहिए।

बहुत सारे ऐसे शब्द हैं जो नेपाली में दूसरा अर्थ है औरहिंदी में अलग अर्थ देते हैं। जैसे-

'सिंघाड़ा' नेपाली में 'समोसा' को कहते हैं। हिंदी में इसका अर्थ पानी में पाया जाने वाला फल 'मेवा' का अर्थ हिंदी में सुखाया फल है, जबकि नेपाली में 'पपीता' को कहते हैं।

राज्य के कई स्कूलों में देवनागरी जानने वाले को ही हिंदी पढ़ाना होता है. जिससे बच्चों की विषय की अवधारणा स्पष्ट नहीं होती। देवनागरी जानने वाले अध्यापक वे होते हैं जो संस्कृत एवं नेपाली पड़े होते हैं। ज्यादातर विद्यालयों में जो अध्यापक संस्कृत, नेपाली पढ़े हुए होते हैं वही अध्यापक हिंदी पढ़ाते हैं। हिंदी शिक्षण में सबसे बड़ी समस्या हिंदी व्याकरण को लेकर होती है। हिंदी व्याकरण में 'लिंग' व्यवस्था में सब उलझ जाते हैं। अनेक लोग पूछते हैं- "गाड़ी' स्त्रीलिंग है तो 'ट्रक' पुल्लिंग कैसे हो जाता है? पुलिस स्त्रीलिंग क्यों है? जबकि वह तो पुरुष है। वाक्य संरचना के आधार पर लिंग का निर्धारण होता है. ऐसा कहने के बावजूद भी लगातार इस विषय पर बहस चलती रही है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध 'शिरीष के फूल' में शिरीष के फूल मैदानी क्षेत्रों में पाए जाने के कारण बच्चे को 'शिरीष के फूल' समझाने में दिक्कत आती है। 'अशोक पेड़' तो समझ आ जाता है, किन्तु पलाश, पुन्नाग, आरण्वध (अमलतास) जैसे पेड़ तो मैदानी क्षेत्रों में पाए जाते हैं. ज्यादातर वन्य संपदा को यहाँ के विद्यार्थी समझ नहीं पाते हैं। कई बार पुस्तकों में चित्र भी स्पष्ट नहीं होते जिससे विषय की जानकारी विद्यार्थियों तक पहुँचाने में दिक्कत आती है।

हिंदी अध्यापकों की कमी होने के कारण इस विषय का अध्ययन-अध्यापन में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। प्राथमिक शिक्षक, स्नातक शिक्षक हिंदी पढ़ाने के लिए न के बराबर हैं। प्राथमिक करना पड़ रहा है। प्राथमिक शिक्षक पर जो शिक्षक नेपाली पढ़ाते हैं, नहीं हिंदी पढ़ाते हैं. इसलिए दोनों का उच्चारण एक से करते हैं। जैसे बड़ी 'ई' छोटी 'इ' को नेपाली के उच्चारण बड़ाईकर छोटाइकर करके सिखाया जाता है। 'क' से कबूतर 'ख' से खरगोश ये हिंदी में सिखाई जाती है तो नेपाली में 'क' से कलम 'ख' से खरायो सिखाया जाता है। ऐसे बहुत से शब्द है जो नेपाली में अलग तरीके से लिखे जाते हैं और हिंदी में दूसरी तरीके से जैसे नेपाली में 'त्रिशूल' में छोटी' "लिखा जाता है तो वही शब्द हिंदी में' 'लगाकर लिखा जाता है 'त्रिशूल'। हिंदी में 'राष्ट्रीय' बड़ी' लगाकर लिखा जाता है, वही नेपाली में करके लिखा जाता है-

'राष्ट्रिय'। नेपाली में छोटी 'f' लिखने का कारण इसका व्याकरणिक नियम है। नियमानुसार दो अक्षर के बीच में आने वाले शब्द में हस्व 'इ' लगता है। हिंदी 'चम्मच' लिखते हैं तो नेपाली में 'चमच' लिखा जाता है। हिंदी में 'हाथी' लिखा जाता है तो नेपाली में 'हाती' लिखा जाता है। हिंदी में 'लहसून' लिखा जाता है तो नेपाली में 'लसुन' लिखते हैं। 'शिकजी' शब्द यहाँ के बच्चों के लिया नया शब्द है। कहते हैं भाषा के कौशलों का विकास करने के लिए वाचन, श्रवण, लेखन का शुद्ध होना आवश्यक है किंतु यहाँ भाषा कौशलों का विकास कर पाना कठिन हो जाता है। शुद्ध उच्चारण से ही शुद्ध लेखन संभव होता है, किंतु यहाँ शुद्धता

कहीं लुप्त होती नजर आती है। हमारे अध्यापकों को प्रशिक्षण की बहुत ज्यादा आवश्यकता है। कई इच्छुक अध्यापकों को प्रशिक्षण नहीं मिल पाता है. इससे भी हिंदी शिक्षण को बढ़ावा नहीं मिल पाता है। हमारे विद्यालयों में हिंदी विषय पड़े हुए अध्यापक/अध्यापिकाओं की सख्त आवश्यकता है। कई हिंदी अध्यापकों के सेवानिवृत के बाद नए अध्यापकों की नियुक्ति जितनी होनी चाहिए थी उतनी नहीं हो पाई है। अध्यापकों की कमी के चलते कई स्कूलों में तो हिंदी को किताब पहुँचती भी नहीं है। अब 2016 से हिंदी को सिक्किम राज्य में पहली कक्षा से पढ़ाया जाने लगा जिससे आने वाले समय में इस विषय में उत्तरोत्तर विकास की संभावनाएँ नजर आती है।

हिंदी शिक्षण से जुड़े अध्यापकों को कई प्रकार की समस्याओं को झेलना पड़ता है। यदि अध्यापक कक्षा में मजाक का माहौल बनाते हुए पढ़ाता है तो विद्यार्थी तुरंत सिर पर चढ़ जाते हैं और औट पटांग सवाल करते हैं। ऐस्य करके वे अध्यापक के लिए सिर दर्द बन जाते हैं। यदि अध्यापक सख्ती दिखाता है तो बच्चे फिर इस विषय को न पड़ने और रुचिकर न होने का आरोप लगाते हैं। एक हिंदी अध्यापक की स्थिति एक मझधार में फंसे नाव की तरह हो जाती है, जिसे अपनी मंजिल दिखाई नहीं देती।

अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी पढ़ाना वास्तव में टेड़ी खीर है। खासतौर पर मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करना। एक बार कक्षा में एक विद्यार्थी ने अध्यापिका से पूछा 'आप इतनी बोरिंग कविताओं को कैसे पढ़ लेती है?' अध्यापिका ने जवाब दिया बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद। बच्चे ने तुरंत उत्तर दिया मुझे अदुवा (अदरक) पसंद नहीं है। ऐसा जवाब पाकर अध्यापिका सोच में पड़ गई कि मुहावरों को किस तरह समझाया जाए। एक और मुहावरा है तुम तो ईद का चाँद हो गए, यानी कभी कभी दिखाई देने वाले। दूसरा मुहावरा है- तुम तो गूलर के फूल हो गए। हिंदी में गुलर का फूल एक सामान्य सी बात है जबकि नेपाली में इसका अर्थ गलत माना जाता है। इस तरह शब्द, वाक्य संरचना के चलते कई भिन्नताएँ और समानताएँ दोनों भाषाओं में दिखाई देती हैं। 'टोकशिंग' देना नेपाली में सिर पर मारकर एक प्रकार की आवाज निकलने की क्रिया को कहते हैं। इसके लिए हिंदी में शब्द ही नहीं है। नेपाली में ऐसे बहुत से शब्द है जिसका रूपांतरण न हिंदी में हो सकता है और न ही अँग्रेजी में। इस भाषा की अपनी सही विशिष्टता उसे अन्य भाषाओं से अलग करती है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

1. तरल्यांग तुरलुंग इसका अर्थ है फ्रेंच बीन जैसे सब्जियों का अच्छी तरह से फलना फूलना।

2. इयारस देखियो- इसका अर्थ है केही दिखा हुआ के अर्थ में होता है।

3. गाडांग गुडुंग- यस शब्द बादल की गर्जना को दिखाने के लिए प्रयोग होता है।

4. चुर्लुम्म भयो बारिश के चलते बुरी तरह से भीग जाने के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है।

5. तुरक्क झोल तरल पदार्थ जैसे सूप, दाल, माँगने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल होता है।

6. प्याच्य इसका अर्थ है तुरंत जवाब देना। किसी के कफछ पूछने, कहने पर तपाक से जवाब देने के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है।

7. सुटुक्क भन्यो- अकेले में रहकर, चुपचाप काम कर लेना, ऐसा काम जो दूसरों की जानकारी में न हो, चुपचाप अकेले कर लेना, इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है।

अन्य राज्यों की तरह हिंदी भाषा का संस्कार यहाँ भी है। आजकल तो स्थिति ये है कि अन्य भाषाओं को गाँव के लोग उतनी आसानी से नहीं अपना रहे, बल्कि हिंदी को बहुत अच्छी तरह से अपना रहे हैं। हिंदी को लोकप्रिय बनाने में सबसे बड़ी भूमिका 'मीडिया' की है। आजकल गाँवों में टी.वी. समाचार, सीरियल, कार्टून, कौन बनेगा करोड़पति जैसे कार्यक्रमों ने इस भाषा के पराएपन को दूर कर दिया है। यहाँ सब हिंदी समझते हैं, बोलते हैं किंतु लिखने में कमजोर है। सब इस भाषा को बड़ी सहजता और सरसता के साथ अपना रहे हैं। हर पार्टी, हर समारोह में हिंदी गीतों की ही धूम रहती है। भाषा एक नदी है जो हमेशा प्रवाहित होती रहती है। हिंदी एक महानदी है जिसमें छोटी छोटी नदी आकर मिल जाती है। ठीक यही स्थिति आज सिक्किम में हिंदी की है। सभी उपभाषाओं को जोड़कर हिंदी ने अपना स्वरूप विकसित किया है। कई नेपाली साहित्यकारों ने हिंदी को इस तरह अंगीकार किया है। अपनी मातृभाषा से बढ़कर हिंदी प्रेम को आगे बढ़ाया है। बहुत से लेखकों साहित्यकारों का कहना है कि उन्हें अपनी भावनाएँ हिंदी भाषा में अभिव्यक्त करते हुए गर्व का अनुभव होता है। इस भाषा को अपनाते हुए कहीं कोई रूकावट नहीं आती, अभिव्यक्ति देने में सहजता रहती है। इसमें मिठास है, शब्द भंडार की कमी नहीं। गजल, कविता, गीत, छंद, उर्दू मिश्रित शब्दावली के चलते भाषा का आकर्षण हमेशा से रहा है। उतनी समृद्ध अन्य भाषा नहीं हैं। हमारे राज्य में आज बहुत से साहित्यकार हिंदी में अपना योगदान दे रहे हैं। उन लेखकों के नाम इस प्रकार हैं- रवि रोदन, गोपाल दाहाल, मणिका शर्मा, भक्ति शर्मा, रूपा तामाङ, तुलसी घिमिरे, सुधा एम. राई, उषा शर्मा, कविता छेत्री, प्रवीण खालिंग, पी.एम. खनाल, विष्णु नियोपानी इत्यादि। प्रवीण खालिंग जी एक अखबार के संपादक भी हैं। गान्तोक से निकलने वाले दैनिक अखबार 'अनुगामिनी' के संपादन, निष्पादन का कार्य भी देखते हैं। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में शामिल होकर हिंदी के विकास में अपना योगदान दिया है। सिक्किम से ही निकलने वाली समाचार पत्रिकाओं में सबसे पुराना 'जमाना' है। यह सिक्किम का सर्वप्रथम हिंदी साप्ताहिक समाचार-पत्र है। यह 1987ई. से प्रकाशित हो रहा है। आजकल इसका नया नामकरण हुआ है यह समाचार-पत्र 'जमाना सदाबहार' के रूप से निकलता है। इसका नया नामकरण 2000ई. में हुआ था। इसके सम्पादक श्रीमती संतोष निराश हैं। इस तरह हिंदी का स्वरूप रूप में फलता-फूलता रहा है।

आयरिश कवि अटोमस डेविस ने कहा था- 'कोई राष्ट्रभाषा को छोड़कर राष्ट्र नहीं कहला सकता। मातृभाषा की रक्षा सीमाओं की रक्षा से भी ज्यादा जरूरी है, क्योंकि वह विदेशी आक्रमण को रोकने में पर्वत और नदियों से भी अधिक समर्थ है।'

भाषाएँ गले का हार हैं, तमिल मराठी हो सिंधी।

अंग्रेजी लिपिस्टिक होने की, हिंदी माँ भारती की बिंदी। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि सिक्किम में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है।

संदर्भ-

1. आरोह भाग 2 (पृ. संख्या 144-145))

आलेख अध्यापन अनुभव एवं पाठन पर आधारित है।

अध्यापकों के साक्षात्कार, वार्तालाप पर आधारित है।